UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 14 लोकगीत (मंजरी)

महत्वपूर्ण गद्यांश की व्याख्या पूरब की ..... अपने विद्यापति हैं।

संदर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'लोकगीत' नामंक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय जी हैं।

प्रसंग – लोकगीत के सम्बन्ध में लेखक मैथिली के महान कवि विद्यापति का परिचय देता है।

व्याख्या – लेखक कहता है कि पूरब की बोलियों में मैथिली के कवि कोकिल विद्यापति के गीत घर-घर में गूंजते हैं। यही स्थिति पूरे देश की है। सभी प्रदेशों के निवासियों के अपने-अपने विद्यापति अर्थातू लोककवि हैं।

पाठ का सार (सारांश)

लोकगीत लोकव्यवहार, स्थानीयता, ग्राम्य जीवन की सुन्दरता आदि गुणों से ओत-प्रोत होते हैं। इनकी पूँज देश के हर कोने में सुनाई देती है। ये लोकगीत विशेष अवसरों पर गाए जाते हैं। पुरुषों और स्त्रियों के अलग-अलग तथा एक साथ गाए जाने वाले लोकगीतों की तो छटा ही कुछ और होती है! चाहे विदेशिया हो या हीर-राँझा, चैता हो या कजरी, बारहमासा, बाउल, भटियाली, सावन, बिरहा, नचारी, छठ के गीत, आल्हा, माहिया, गरबा, सोहर, बानी, सेहरा न जाने कितने; ये सब अपनी सोंधी सुगंध से जनजीवन का अनूठा परिचय देते हैं। मैथिली के कवि कोकिल विद्यापति की भाँति सारे देश में स्थानीय 'विद्यापतियों की कमी नहीं।।

https://www.evidyarthi.in/